सतगुरूवार – दीदी निमित्त विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (मोहिनी बहन)

आज आप सबका यादप्यार नयनों में समाते हुए जब वतन में पहुंची तो सामने से बाबा दीदी दादी के साथ आपस में बात करते, मुस्कराते चले आ रहे थे। जैसे अपनी मस्ती में मस्त, अपनी बातों में लवलीन थे। जैसे ही समीप आये तो बाबा ने अपनी मीठी दृष्टि देते प्यार से दीदी दादी दोनों को अपनी बांहों में समा लिया। उस समय बहुत-बहुत स्नेह भरे सुख का, शक्ति का अहसास हो रहा था। फिर मैं दीदी दादी दोनों से मिली। मैंने कहा बहुत दिनों के बाद आज दीदी दादी की जोड़ी साथ-साथ देखी है। आप कहाँ से आ रहे हो! तो दीदी बोली आज बाबा हम दोनों को सेन्टर की और पूरे विश्व की सैर कराने ले गया था। मैंने पूछा इस सैर में आपने क्या देखा? तो दीदी ने पहले सेवाकेन्द्रों की सैर का समाचार सुनाया, दीदी बोली विश्व में चारों ओर जो सेवाकेन्द्र हैं, उसमें कई तो बहुत हरे भरे हैं, जहाँ बहुत से भाई बहिनें थे और कई सेवाकेन्द्र ऐसे थे जैसे केवल एक दीया जल रहा था, लेकिन उमंग उत्साह का वातावरण अच्छा था, सबके अन्दर बाबा को प्रत्यक्ष करने का उमंग था, सेवा का विस्तार करने का संकल्प था। इसके लिए सभी प्लैन बना रहे थे, बड़े सेन्टर्स कमजोर सेन्टर्स को भी अपना साथी बना रहे हैं, ताकि वे भी उमंग-उत्साह में आकर साथ मिलकर कार्य कर सकें। इस तरह वातावरण के अन्दर एक खुशहाली, हल्कापन, उमंग-उत्साह देखा। फिर मैंने पूछा विश्व की सैर में क्या देखा? तो दीदी कहती है, विश्व में तो बहुत हलचल है। चारों तरफ के वातावरण में बहुत हलचल थी। एकॉनामी में जो हलचल आई है, उससे किसी में उमंग-उत्साह नहीं है, चारों तरफ प्रकृति के भी खेल देखे। कहीं तो इतनी बाढ़ आई हुई है जैसे सागर उछलता है, ऐसे नदियां उछल रही थी। कई जगह लोग आकाश की ओर आंख लगाकर बैठे हैं, बारिस का आह्वान कर रहे हैं। कई जगह लड़ाईयां लग रहीं हैं, जैसे धुआं उठ रहा है। कई जगह तूफान आ रहे हैं, मनुष्यों में हलचल, प्रकृति में हलचल.. सब तरफ हलचल का वातावरण देखा।

मैंने कहा बाबा ऐसा विश्व कितना समय और चलेगा? तो बाबा ने कहा बच्ची जितना समय तुम देंगी उतना समय यह चलेगा। प्रकृति तो आपकी दासी है, अभी यह खोखली खाली हो गई है, अभी आप लोगों का कार्य है जल्दी जल्दी सम्पन्न बन, इसे भी सम्पन्न करना। तो दीदी कहती है बाबा हम तो सब तैयार हैं, आप जब अमृतवेले हमारे सारे ग्रुप को बुलाते हो तो सारा ग्रुप कहता है कि हम रेडी हैं, आप आर्डर दो तो हम अपना कार्य पूरा करें। बाकी साकारी दुनिया के बच्चों को आप जानें। फिर मेरे से पूछा बच्ची तुम क्या समझती हो, सब तैयार हैं? मैने कहा यथाशक्ति तो सब तैयार हैं, आजकल तो शान्तिवन में आपके मुरब्बी यज्ञ स्नेही, पितृ स्नेही मुख्य भाईयों की भट्ठी चल रही है। हर एक के अन्दर उमंग है कि अब जल्दी से समाप्ति समारोह मनायें और वापस घर चलें। तो बाबा ने कहा जब ऐसे मुरबी बच्चों का संगठन हुआ है तो इनको आपस में मिलकर कोई ठोस प्लैन बनाना चाहिए, कर रहे हैं, हो रहे हैं... नहीं। अभी कोई ठोस प्रोग्राम बनाये जो संकल्प किया और हुआ। जैसे ताली बजाओ और हाज़िर हो जाए। आप सिद्धि स्वरूप आत्मायें संकल्प करो और उसी समय वह पूरा हो जाए। ऐसे मुरब्बी बच्चे ऐसा कोई प्लैन बनायें, ऐसा

संकल्प करें, जो एक ही सबका संकल्प हो, एक ही वृत्ति वा भावना हो तो यह काम सहज हो सकता है। देखेंगे, करेंगे... नहीं, करना ही है होना ही है। जब एक ही शब्द, एक ही विचार से एक ही दृढ़ता से एक ही बात करेंगे तो यह कार्य सफल होगा। तो अभी यह सारा कार्य आप लोगों के लिए रूका हुआ है। बाबा इशारा कर रहा है, टाइम भी दिया हुआ है, ताकि जो रहा हुआ है वह पूरा करके अपनी सम्पन्नता की ओर चलें, सम्पूर्ण बनें तो बाबा घण्टी बजायेगा। प्रकृति भी तैयार है, समय भी तैयार है। आप समय को नहीं देखो लेकिन स्वयं को देखो कि स्वयं तैयार होकर समय को समीप लाना है। तो दादी बोली बाबा आप हमें इनके पास भेजो तो हम इन्हें अभी-अभी तैयार कर दें। बाबा ने कहा सूक्ष्म इनको वायब्रेशन देकर तैयार करो। दादी को बहुत उमंग आ रहा था। बाबा ने कहा आप सब ऐसी जगह बैठे हो जो आप सबका एक ही संकल्प है, जिसकी ताकत है। अभी यह बच्चे तो सब बिखरे हुए हैं, अभी सब इकट्ठे हुए हैं। अभी अगर लव लॉ का बैलेन्स, न्यारे प्यारे का, गम्भीरता रमणीकता का बैलेन्स.... ऐसे बैलेन्स बराबर होगा तो बलिसफुल बनेंगे। तो बाबा ने कहा अब ऐसा कोई फाइनल प्लैन बनाओ जो प्रैक्टिकल में आ जाए।

फिर मैंने बाबा के सामने भोग रखा और खोला। तो बाबा ने कहा देखो दीदी आज तुम्हारे लिए कितने प्रकार का भोग आया है। सभी का आपसे कितना प्यार है! तो दीदी ने कहा आज सतगुरूवार है तो बाबा यह भोग तो आपके लिए भी आया है। तो पहले दीदी ने बाबा को खिलाया। फिर बाबा ने दीदी दादी दोनों को बड़े प्यार से भोग खिलाया। फिर दोनों ने मधुबन निवासियों को बहुत-बहुत यादप्यार दिया और कहा मधुबन वाले तो सेवा में नम्बरवन हैं, प्यार से, दिल-जान से सेवा करते हैं, इनकी सेवा का रिकार्ड है जो सब गायन करते हैं। जिनका रिकार्ड अच्छा है उनको सबका रिगार्ड मिलता है। मैंने कहा दीदी आपको भट्ठी वालों के लिए कुछ कहना है। तो दोनों ने कहा कि हम सूक्ष्म में तो इन सबके सहयोगी हैं ही। जब किसी कार्य में मूंझे या कोई भी उलझन आये तो सब संगठित रूप में संकल्प करें जो हमारे पास वह संकल्प पहुंचे और हम सहयोग दे सकें। ऐसे कहते सभी को दीदी दादी ने और बाबा ने बहुत-बहुत यादप्यार दिया और मैं वापस साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।